महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयमें फ़िदेल कास्त्रो याद किए गए

वर्धा संवाद ने किया आयोजन.

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय , वर्धा के गुर्रम जासुवा सभागार में वर्धा संवाद की ओर से अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध मार्क्सवाद के पुरोधा फ़िदेल कास्त्रो को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी. इस मौक़े पर अनुवाद एवं निर्वचन विभाग के अधिष्ठाता प्रो देवराज, जनसंचार विभाग के प्रो. अरुण त्रिपाठी, विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के डॉ. राकेश मिश्रा एवं वर्धा संवादके संयोजक और डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के प्रभारी निदेशक डॉ. सुरजीत कुमार सिंह उपस्थित थे इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शोधार्थियों ने अपनी

उपस्थिति दर्ज करवाई. चूँकि यह मौका एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति का था जिसने अपनी कुशलता एवं बुद्धिमता से विश्वशक्ति कहे जाने देश का आधिपत्य स्वीकार करने से मना किया और ये सब यही तक नहीं रुका बल्कि अपने देश को अमेरिकी साम्राज्वाद से मुक्त करवाया. तथा सम्पूर्ण विश्व के समक्ष देश के विकास के लिए आवश्यक चुनौतियों का रोल मॉडल प्रस्तुत किया. अपने व्यक्तव्य में बोलते प्रो. देवराज ने कहा कि आज साम्राज्यवाद के मुखड़े को उदारवाद से ढका जा रहा है और उन्होंने इस बात को स्पष्ट किया कि हम किसी भी व्यक्ति को क्यों याद करते हैं, और हम फ़िदेल को क्यों याद करें एवं क्यों नहीं? फ़िदेल के व्यक्तित्व में कई स्थानों पर हमें कुछ खामियां नज़र आती है जिन्हें हम नज़रअंदाज नहीं कर सकते हैं किन्तु बावजूद उसके चे ग्वेरा, फ़िदेल एवं उनके सहयोगियों ने छोटे से लैटिन अमेरिकी देश को अमेरिका की तानाशाही से मुक्त करवाने में गुर्रिला पद्धति से अपने दुश्मनों को देश से बाहर करने का कार्य किया. जो अतीत के कालखंडों में गौरवशाली इतिहास के रूप में दर्ज है. प्रो देवराज ने आगे कहा कि एशिया राजनीतिक दृष्टिकोण से भले ही पराजित रहा हो लेकिन सांस्कृतिक रूप से कभी भी पराजित नहीं हुआ है. अन्त में भारत में सत्तापक्ष की सरकार के द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में हो रहे हमले चाहे वह शिक्षा, अभिव्यक्ति या फिर रोजगार निरन्तर हो रहे की ओर भी इशारा करते हुए आज हमें फ़िदेल कास्त्रो को स्मरण करने की आवश्यकता है.

जनसंचार विभाग के प्रो. अरुण त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा कि क्रांतिकारी आत्मविश्वास से लबरेज फ़िदेल कास्त्रो अपनी मौत के बारे में कहते थे कि "मैं तब तक नहीं मरूँगा जब तक अमेरिका नष्ट नहीं होगा" फ़िदेल कास्त्रो ने अपने जीवन का यही उच्च लक्ष्य रखा भी था. वे इस तरह अमेरिका के आँगन में बैठकर उसको निरंतर चुनौती देते थे और अमेरिका ने उनके ऊपर 650 से अधिक बार जानलेवा हमले करवाये. लेकिन फ़िदेल कास्त्रो हमेशा बच निकलते थे. फ़िदेल हमेशा से कहते थे कि हम एक ऐसी व्यवस्था एवं विचार लाना चाहते है जो साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ सकें, तथा इसके पश्चात समता एवं न्याय पर आधारित समाज की रचना की जाए. फ़िदेल कास्त्रो ने ताउम्र संघर्ष का जीवन जिया. जब उन्होंने अपने देश क्यूबा को अमेरिका से मुक्त करवाया तो उनके समक्ष कई सारी चुनौतियाँ थी जिनका सामना करना था बखूबी उन्होंने किया भी. प्रो. अरुण त्रिपाठी ने आगे कहा कि फ़िदेल कास्त्रो ने सबसे पहले तेल की समस्या उनके समक्ष उभरी किन्तु उसका भी उन्होंने राष्ट्रीयकरण किया. जब क्यूबा की 7 करोड़ टन

चीनी को अमेरिका ने लेने से इनकार किया उसका भी राष्ट्रीयकरण किया. यह सब उनके अंतरराष्ट्रीय स्तर के सम्बन्धों को बखूबी दर्शाता हैं. तथा उनके द्वारा किये गए भूमि सुधार का श्रेय फ़िदेल कास्त्रो को जाता है. अपने कार्यकाल में शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्ण कार्य इनके द्वारा किये गए अन्त में प्रो. अरुण त्रिपाठी ने कहा कि फ़िदेल कास्त्रो को दो मुख्य कारणों से याद करना लाज़िमी है एक अभूतपूर्व क्रांतिकारीहोने के कारण और दूसरा उनके जीवन दर्शन के कारण., फ़िदेल ने कुल 12 पुस्तकें लिखी है. लैटिन अमरीकी देश भारत के बुद्धिजीवियों के लिए अंजान नहीं है. इस स्थान पर भारत की सर्जिकल स्ट्राइक के सन्दर्भ में यह बात स्पष्ट होती है कि भारत में इतने हमले होते है, चाहे वह पठानकोट हो या फिर उड़ी का मामला हो. किन्तु परिणामस्वरूप कुछ भी मूल कार्यवाही नहीं देखी जाती है. भारत

के राजनयिकों को फ़िदेल एवं क्यूबा से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है. फ़िदेल कास्त्रो की सरकार ने निरन्तर वैश्वीकरण के खतरों से निज़ात पाने की दिशा में कार्य किया. तथा औद्योगीकरण के कारण होने वाले खतरों से निपटने के लिए स्थानीयकरण के रूप में अपना योगदान प्रस्तुत किया. फ़िदेल कास्त्रो के भारत के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों का जिक्र भी प्रो. अरुण त्रिपाठी ने किया.

कार्यक्रम के अन्त में डॉ. राकेश मिश्र ने धन्यवाद देते हुए फ़िदेल कास्त्रो के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि फ़िदेल ने छापामारी पद्धति से लोगों को निज़ात दिलवाई. जो अपने आप में महत्वपूर्ण है. उनका प्रभाव लैटिन अमेरिका के साहित्य, संस्कृति, लेखकों,विचारकों आदि पर बहुत गहरे रूप में प्रभाव पड़ा हैं. कार्यक्रम का संचालन वर्धा संवाद के संयोजक और डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के प्रभारी निदेशक डॉ. सुरजीत कुमार सिंह द्वारा किया गया. इस अवसर पर डॉ. मनोज राय के अलावा विश्वविद्यालय के छात्र और शोधार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई.